संबंध मे अन्य भाव

Other Feelings in Relationship

न्याय

Justice

प्रेम – अखंड समाज का आधार

Love – The basis for Undivided Family

मानव चेतना में जीता हुआ मानव

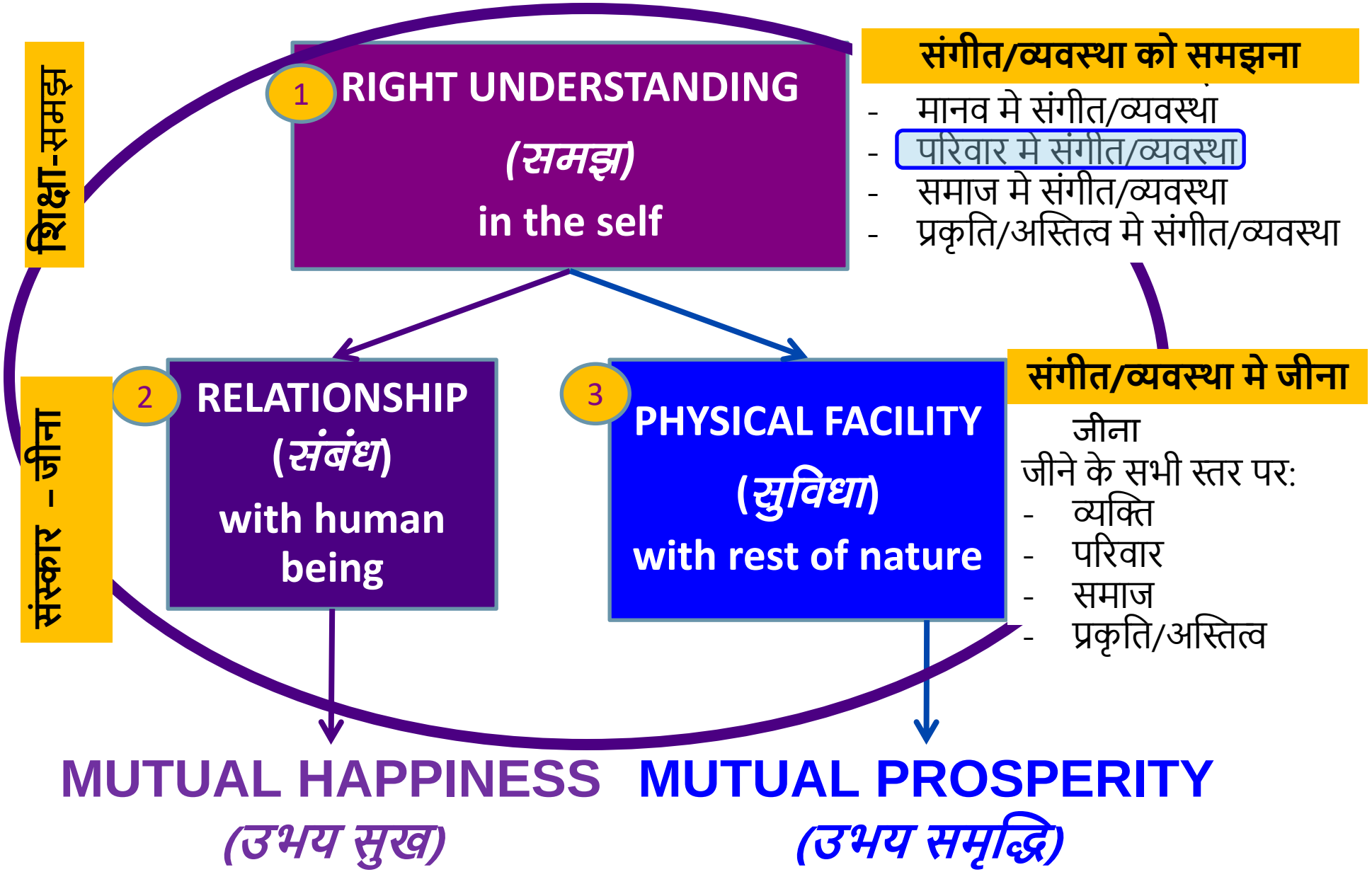

संबंध

1. संबंध है – मैं का मैं से
2. संबंध में भाव है – एक मैं ($मैं_1$) में दूसरे मैं ($मैं_2$) के लिये
3. इन भावों को पहचाना जा सकता है –निश्चित हैं - नौ भाव हैं
4. इनका निर्वाह और मूल्यांकन करने से उभय सुख होता है

संबंध में भाव :

1. विश्वास Trust - आधार मूल्य
2. सम्मान Respect
3. स्नेह Affection
4. ममता Care
5. वात्सल्य Guidance
6. श्रद्धा Reverence
7. गौरव Glory
8. कृतज्ञता Gratitude
9. प्रेम Love - पूर्ण मूल्य

स्नेह Affection

दूसरे को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।

निर्विरोधिता।

The feeling of being related to the other

(acceptance of the other as one's relative, the other is like me)

सम्बन्ध में परस्परपूरकता के लिए ज़िम्मेदारी एवं निष्ठा

ईर्ष्या, द्वेष स्नेह के अभाव को इंगित करता है

ममता Care

संबंधी के **शरीर** के प्रति जिम्मेदारी का भाव

Feeling of responsibility toward the **body** of my relative

संबंधी के शरीर के **पोषण व संरक्षण** की स्वीकृति का भाव।

The responsibility & commitment for **nurturing** and **protection** of the Body of my relative

वात्सल्य Guidance

संबंधी के **"मैं"** के प्रति जिम्मेदारी का भाव

Feeling of responsibility toward the **self** of my relative

संबंधी को **समझदार व जिम्मेदार** बनाने की स्वीकृति का भाव।

The responsibility & commitment for ensuring **Right Understanding** and **Right Feeling** in the self of my relative

ममता एवं वात्सल्य स्नेह के सहज प्रतिफल है

क्या आज हम ममता एवं वात्सल्य दोनों को सुनिश्चित कर रहे हैं?

या अधिकांश समय सिर्फ ममता का ध्यान रखते है ?

जैसे: क्या बच्चो को खाना खिलाते समय उनके शरीर के साथ–साथ **"मैं"** का भी ध्यान रख पाते है ?

श्रद्धा Reverence

श्रेष्ठता की स्वीकृति का भाव।

The feeling of acceptance for excellence

श्रेष्ठता: सही समझ की पूर्णता

Excellence : Completeness of Right Understanding

श्रेष्ठता के लिए कार्य करना और एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करना एक ही बात नहीं है।

श्रेष्ठता में, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को अपने स्तर पर लाने में सहायता करता है

प्रतियोगिता में, वह दूसरे को अपने स्तर तक पहुँचने से रोकता है

गौरव Glory

जिन्होंने श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया है, उनके प्रति भाव

Feeling for those who have made effort for excellence

कृतज्ञता Gratitude

जिन्होंने मेरी श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया है, उनके प्रति भाव

Feeling for those who have made effort for my excellence

विश्वास, सम्मान, श्रद्धा, गौरव और कृतज्ञता

मानव की मूल चाहना = निरंतर सुख

= श्रेष्ठता को पाना

श्रेष्ठता (Excellence)

व्यवस्था को समझना

व्यवस्था मे जीना

↓

निरंतर सुख

4 स्तरो पर

1. व्यक्ति मे
2. परिवार मे
3. समाज मे
4. प्रकृति /अस्तित्व मे

विश्वास , सम्मान – सभी के प्रति

श्रद्धा - श्रेष्ठ मानवों के प्रति

गौरव - जिन्होंने श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया, उनके प्रति

कृतज्ञता - जिन्होंने मेरी श्रेष्ठता के लिए प्रयास किया

Feeling in Relationship संबंध में भाव

1- विश्वास Trust आधार मूल्य

2- सम्मान Respect

3- स्नेह Affection

4- ममता Care

5- वात्सल्य Guidance

6- श्रद्धा Reverence

7- गोरव Glory

8- कृतज्ञता Gratitude

9- प्रेम Love पूर्ण मूल्य

विरोध, स्नेह तथा प्रेम

अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर जांच कर देखिये कि आप संबंध में रहना चाहते है:

किसी के साथ नहीं → किसी के साथ संबंध का भाव नहीं
– सभी के साथ विरोध में

एक के साथ → एक के साथ संबंध का भाव
कई के साथ → कई के साथ संबंध का भाव

सभी के साथ → सभी के साथ संबंध का भाव

स्नेह - दूसरे को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव

Affection – The feeling of being related to the other (acceptance of the other as one's relative)

प्रेम - हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव

Love – The feeling of being related to all (Complete Value)

विरोध, स्नेह तथा प्रेम

अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर जांच कर देखिये कि आप संबंध में रहना चाहते है:

किसी के साथ नहीं X → किसी के साथ संबंध का भाव नहीं
– सभी के साथ विरोध में

एक के साथ √ → एक के साथ संबंध का भाव
कई के साथ √ → कई के साथ संबंध का भाव
} स्नेह

सभी के साथ √ → सभी के साथ संबंध का भाव } प्रेम

स्नेह - दूसरे को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव

Affection – The feeling of being related to the other (acceptance of the other as one's relative)

प्रेम - हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव

Love – The feeling of being related to all (Complete Value)

प्रेम Love

Love(प्रेम) – The feeling of being related to all (Complete Value)

= हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारने का भाव।

= पूर्णता में रति - पूर्णता में रत होना - हर एक के साथ संबंध में निहित रस (भावों) की अनुभूति करना।

सम्बन्ध की स्वीकृति के भाव का आरंभ, मानव के दूसरे मानव से संबंधित होने की पहचान से होता है (स्नेह) तथा यह भाव धीरे-धीरे सभी मानव से संबंधित होने के भाव तक फैलता है और फिर प्रकृति में प्रत्येक इकाई (मानव के साथ-साथ अन्य इकाइयों) तक भी फैलता है। (प्रेम)

एक ⟶ अनेक ⟶ हर एक को संबंधी के रूप में स्वीकारना

प्रेम की भावना दया, कृपा और करुणा के रूप में व्यक्त की जाती है। भाव सभी के लिए होते है, तथा निर्वाह केवल उन लोगों के साथ किया जाता है जो संपर्क में आते हैं

प्रेम का भाव ही अखंड समाज की नींव है

Justice

Justice is the recognition, fulfilment and evaluation of human-human relationship, leading to mutual happiness

Recognition

- Unconditionally accepting the relationship. Accepting the other with their full possibility (potential) and with their current level of competence

Fulfilment

- Ensuring the naturally acceptable feeling in oneself and sharing it with the other
- Living with responsibility with the other unconditionally. This makes the other comfortable and assured
- Making effort for mutual development, i.e. development of one’s own competence and being of help to the other in developing their competence

Evaluation

- Verifying that the right feeling has reached to the other and that the other is able to make out that it is the right feeling

न्याय= मानव-मानव संबंध की पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन और उभय सुख

पहचानना

- बिना शर्त संबंध को स्वीकार करना। दूसरे को उनकी क्षमता और वर्तमान योग्यता के साथ स्वीकार करना

निर्वाह

- स्वयं में सहज स्वीकार्य भाव को सुनिश्चित करना और इसे दूसरे के साथ साझा करना
- दूसरे के साथ बिना शर्त जिम्मेदारी से जीना। यह दूसरे को सहज और आश्वस्त करता है
- उभय सुख के लिए प्रयास करना, अपनी योग्यता का विकास करना तथा साथ दूसरे के विकास में मदद करना

मूल्यांकन

- यह जांच करना कि सही भाव दूसरे तक पहुँच गया है तथा दूसरे को सही भाव को समझने में सहयोग करना

1. संबंध है – मैं का मैं से
2. संबंध में भाव है – एक मैं ($मैं_1$) में दूसरे मैं ($मैं_2$) के लिये
3. इन भावों को पहचाना जा सकता है –निश्चित हैं - नौ भाव हैं
4. इनका निर्वाह और मूल्यांकन करने से उभय सुख होता है

संबंध में भाव :

1. विश्वास Trust - आधार मूल्य
2. सम्मान Respect
3. स्नेह Affection
4. ममता Care
5. वात्सल्य Guidance
6. श्रद्धा Reverence
7. गौरव Glory
8. कृतज्ञता Gratitude
9. प्रेम Love - पूर्ण मूल्य

न्याय= मानव-मानव संबंध की पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन और उभय सुख

न्याय → परिवार से विश्व परिवार तक → अखंड समाज

आपके विचार

Self Reflection